7

प्रज्ञा-प्रवाह

व्याकरण एवं अभ्यास पुस्तिका

प्रज्ञा-प्रवाह

व्याकरण एवं अभ्यास पुस्तिका

7

प्रकाशक

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र

नारायण भवन, गीता निकेतन परिसर, सलारपुर रोड़,

कुरुक्षेत्र-136118 ☎ 01744-259941

: vbukprakashan@gmail.com, vbukkkr@yahoo.co.in : vbukprakashan.com

प्रकाशक एवं वितरक

Vidya Bharti Uttar Kshetar

Narayan Bhawan, Gita Niketan Parisar, Salarpur Road, Kurukshetra-136118

01744-259941 : vbukprakashan@gmail.com, vbukkkr@yahoo.co.in : vbukprakashan.com

वितरण-केन्द्र

भारतीय शिक्षा समिति, जम्मू कश्मीर प्रदेश

भारतीय विद्या मंदिर परिसर, अम्बफला, वेद मंदिर, जम्मू-180 005

दूरभाष : 0191-2547953

E-mail: bssjk08@gmail.com
E-mail: bssjmu2006@yahoo.com

सर्वहितकारी शिक्षा समिति, पंजाब

विद्या धाम, गुरु गोबिन्द सिंह एवेन्यू,

नजदीक टेलीफोन एक्सचेंज, जालन्धर-144 009

दूरभाष : 0181-2421199, 2420876

E-mail: ses.jld@gmail.com

हिमाचल शिक्षा समिति, शिमला

सरस्वती विद्या मन्दिर, हिम रश्मि परिसर, विकास नगर,

शिमला-171 009, दूरभाष : 0177-2620813, 2620814

E-mail: himachalshikshasamitishimla@gmail.com
E-mail: shikshasamiti@sancharnet.in

हिन्दू शिक्षा समिति, हरियाणा

संस्कृति भवन, गीता निकेतन आवासीय विद्यालय परिसर,

लाजपत राय मार्ग, कुरुक्षेत्र-136118 (हरियाणा)

दूरभाष : 01744-270241, 9996542500

E-mail: hsskkr@yahoo.co.in

ग्रामीण शिक्षा विकास समिति, हरियाणा

संस्कृति भवन, गीता निकेतन आवासीय विद्यालय परिसर,

लाजपत राय मार्ग, कुरुक्षेत्र-136118 (हरियाणा)

दूरभाष : 01744-270241, 9996542500

E-mail: gsvskkr@yahoo.co.in

हिन्दू शिक्षा समिति-दिल्ली

डी.ए.वी.व.मा. विद्यालय क्र. 2, शंकर नगर, दिल्ली-110 051

दूरभाष : 011-22008542

E-mail: hindushikshasamiti@gmail.com

हिन्दू शिक्षा समिति, न्यास

गीता बाल भारती परिसर, राजगढ़ कॉलोनी,

दिल्ली-110 031

दूरभाष : 011-22002957

E-mail: hssn2604@gmail.com

समर्थ शिक्षा समिति

सरस्वती शिशु/बाल मन्दिर परिसर, आरामबाग,

डेसू कार्यालय के पास, पहाडगंज, नई दिल्ली-110055

दूरभाष : 011-23631216, 23631247

E-mail: samiti59@yahoo.com

प्रथम संस्करण : 2020

वैधानिक चेतावनी: यह पुस्तक विद्या भारती उत्तर क्षेत्र द्वारा प्रकाशित है। इस पुस्तक का प्रत्येक भाग सर्वाधिकार सुरक्षित है।

लेखक मण्डल

शेषपाल सिंह
M.A., B.Ed.
प्रान्त शैक्षिक प्रमुख
विद्या भारती हरियाणा

सुभाष शर्मा
M.A., B.Ed.
प्रान्त सह सेवा शिक्षा प्रमुख
विद्या भारती हरियाणा

राम कुमार
M.A., L.T., B.Ed.
प्रान्त प्रशिक्षण प्रमुख
विद्या भारती हरियाणा

राजेश कुमार
M.A., L.T., B.Ed.
सैक्टर 40, चण्डीगढ़

Printed By :

Bulbul Printing Press, Plot No. 1831, Deep Complex, Hallo Majra, Near Power Grid, Chandigarh-160002

प्रस्तावना

'प्रज्ञा प्रवाह' व्याकरण एवम् अभ्यास पुस्तिका भाग-7 के अध्ययन एवम् प्रायोगिक क्रियाओं के माध्यम से विद्यार्थी व्याकरण को सहजता व सरलता से सीखने में सक्षम होंगे। व्याकरण के प्रयोग से भाषा सीखने और समझने से विद्यार्थियों का स्वतन्त्र चिन्तन भी विकसित होगा तथा भाषा का रचनात्मक प्रयोग भी बढ़ेगा। पुस्तक केवल परीक्षा आधारित न होकर व्यावहारिक व नैतिक मूल्य आधारित बने तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (N.C.E.R.T.) के मानकों के अनुरूप बनकर विद्यार्थी के सभी कौशलों में वृद्धि करे, ऐसा एक सद्प्रयास है।

विद्यार्थी की कल्पना शक्ति एवम् सृजनात्मकता का विकास सहज रूप में हो, इस दृष्टि से पुस्तक की भाषा को सरल, स्पष्ट और सुबोध रखा गया है। अध्ययन व अध्यापन में रुचि बने, इसलिए मनोभाव जागरण हेतु चित्रों का यथा स्थान प्रयोग किया गया है। पाठ्य सामग्री का चयन विद्यार्थियों की आयु व ग्राह्य क्षमता को ध्यान में रखकर किया गया है। शिक्षण-सूत्र व शिक्षण-युक्तियों का भी उचित उपयोग हुआ है।

सभी अध्यायों में तथा उनके अभ्यास में शिक्षणेत्तर गतिविधियों को स्थान दिया गया है जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होगा। स्थानीय परिवेश व जीवन शैली के उदाहरण व प्रायोगिक कार्य विद्यार्थी को जीवन मूल्यों से जोड़ेंगे, ऐसा विश्वास है।

लेखन कार्य और वह भी व्याकरण सम्बन्धी, सर्वथा एक कठिन कार्य है। उत्तर क्षेत्र के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष श्रीमान सुरेन्द्र अत्री जी व हरियाणा प्रान्त के संगठन मन्त्री श्रीमान रवि कुमार जी के मार्गदर्शन में यह कार्य संभव हो पाया। इनके अतिरिक्त डॉ॰ कुलदीप कुमार, आचार्य हरीश बघेल (विज्ञान स्नातक, बी.एड.) एवं जिन अन्य बंधु-भगिनियों का सहयोग प्राप्त हुआ है, उन सभी के प्रति लेखक मण्डल आभार व्यक्त करता है।

आपके बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी तथा हृदय से स्वागत भी।

लेखक मण्डल

अनुक्रमणिका

क्रं॰	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
01.	भाषा, व्याकरण, बोली	05
02.	वर्ण व वर्तनी	09
03.	संधि	16
04.	शब्द व्यवस्था –शब्दों का वर्गीकरण	24
	शब्द भण्डार – विलोम/विपरीतार्थक	26
	पर्यायवाची/समानार्थक	27
	अनेकार्थी शब्द	28
	समश्रुत/समुच्चरित भिन्नार्थक शब्द	29
	वाक्यांश के लिए एक शब्द	30
	तत्सम – तद्भव शब्द	31
05.	शब्द रचना – उपसर्ग और प्रत्यय	34
06.	शब्द रचना – समास	39
07.	विकारी शब्द – 1. संज्ञा	43
	लिंग	45
	वचन	48
	कारक	51
08.	विकारी शब्द – 2. सर्वनाम	54
09.	विकारी शब्द – 3. विशेषण	61
10.	विकारी शब्द – 4. क्रिया, काल, वाच्य	66
11.	अविकारी शब्द	73
12.	विराम चिह्न	78
13.	वाक्य-व्यवस्था	82
14.	मुहावरे व लोकोक्तियाँ	88
15.	अपठित गद्यांश	92
16.	पत्र लेखन	95
17.	निबन्ध लेखन	99
18.	सुलेख लेखन	107
19.	भारतीय पर्व एवं त्योहार	109
20.	हिंदी वर्णमाला लेखन विधि	111

पाठ 1

भाषा, व्याकरण, बोली

हम समाज में रहते हुए अनेक व्यक्तियों, यहाँ तक कि अन्य प्राणियों से भी संवाद स्थापित करने की कोशिश करते हैं। इसके लिए अनेक तरीके अपनाते हैं। संकेत करते हैं, बोलते हैं, गाते और बजाते हैं। चिह्न (रेखाचित्र) बनाकर भी भावों का आदान-प्रदान करते हैं। विश्व में इन्हीं तरीकों से हम संवाद करते हैं। जिस तरीके से सामने वाला प्राणी हमारे विचार सुनकर समझ लेता है, वही भाषा होती है। अर्थात् **भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मानव अपने विचारों को संकेतों से, बोलकर या लिखकर प्रकट करता है।**

भाषा के मुख्यतः दो रूप प्रचलित हैं

(1) मौखिक भाषा **(2) लिखित भाषा**

(1) मौखिक भाषा - इसके अन्तर्गत मानव अपने विचारों-भावों को बोलकर, गाकर, कहानी-कथन, भाषण आदि के माध्यम से व्यक्त करता है।

(2) लिखित भाषा - इसके अन्तर्गत मानव अपने विचारों-भावों को लिखकर प्रकट करता है। **जैसे** - गीता, रामचरितमानस आदि धार्मिक ग्रन्थ व अन्य लिखा हुआ साहित्य व आपके (छात्र भैया/बहनों) द्वारा पढ़ी जाने वाली सभी पाठ्य पुस्तकें।

दो रूपों के अलावा मानव कभी-कभी संकेतों द्वारा भी अपने विचार प्रकट करता है। इसे सांकेतिक भाषा कहते हैं। जैसे कुछ लोग जन्मजात बोल व सुन नहीं पाते। वे लोग संकेतों के माध्यम से अपने विचारों को प्रकट करते हैं। कभी-कभी सामान्य मनुष्य भी विशेष परिस्थितियों में संकेतों के माध्यम से अपने विचार प्रकट करता है, इसी को सांकेतिक भाषा के रूप में जाना जाता है। **जैसे** - बहरे (बधिर)व गूँगे (मूक) व्यक्ति द्वारा किए गए संकेत।

उदाहरण

(1) गार्ड हरी झंडी दिखाकर रेलगाड़ी को चलाने का निर्देश करता है।

(2) नगर के चौराहे पर खड़ा पुलिस का सिपाही हाथों के संकेत से बस, कार, रिक्शा आदि वाहनों को आगे जाने या रुकने का संकेत करता है।

(3) रास्तें में खड़ा व्यक्ति हाथ के माध्यम से बस रुकवाता है।

(4) बोलने या सुनने में अक्षम मनुष्य संकेत करके भोजन माँगता है।

(5) सांकेतिक भाषा प्रयोग में तो है, किन्तु इसे अधिक मान्यता नहीं मिल सकी क्योंकि संकेतों का अर्थ सभी व्यक्ति अपने-अपने तरीके से निर्धारित कर लेते हैं।

व्याकरण - जिस प्रकार हमारा जीवन व्यवस्थित होता है, उसी प्रकार व्याकरण भाषा को व्यवस्थित करती है। व्याकरण भाषा की नियमावली है, जिसके द्वारा भाषा का सुनना, बोलना, पढ़ना व लिखना व्यवस्थित किया जाता है।

व्याकरण के मुख्य रूप से चार भाग हैं –

(1) वर्ण व्यवस्था (2) शब्द व्यवस्था (3) पद व्यवस्था (4) वाक्य व्यवस्था

वर्ण व्यवस्था – व्याकरण के इस भाग में वर्णों के आकार, उच्चारण, वर्गीकरण और इनके संयोग व सन्धि के नियमों पर विचार किया जाता है।

शब्द व्यवस्था– इसमें शब्दों की उत्पत्ति, निर्माण, भेद और विकास आदि पर विचार किया जाता है।

पद व्यवस्था– पद व्यवस्था के अन्तर्गत हम उसके भेद, व्याकरणिक इकाई और रचना आदि पर विचार करते हैं।

वाक्य व्यवस्था– वाक्य व्यवस्था के अन्तर्गत वाक्य संरचना, रूपान्तरण, भेद और विराम चिह्नों पर प्रकाश डाला जाता है।

भाषा और बोली – भाषा का क्षेत्र विशाल होता है। इसमें साहित्य की रचना की जाती है। जबकि बोली का क्षेत्र छोटा होता है। प्रत्येक छोटे क्षेत्र की अपनी बोली होती है। जैसे मेवाती, हरियाणवी और खड़ी बोली आदि।

दूसरे शब्दों में, **भाषा के आंचलिक रूप को बोली कहते हैं।** भाषा का यह सरलतम रूप उपभाषा कहलाता है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुरूप भारत संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी है। हिन्दी भाषा का रूप भारतवर्ष में बहुत व्यापक है। यह विदेशों में भी बोली जाती है और धीरे-धीरे अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में विकसित हो रही है।

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को स्वीकृति प्रदान की गई है, जो निम्न प्रकार से हैं-

(01) असमिया (02) उड़िया (03) उर्दू (04) कन्नड़
(05) कश्मीरी (06) कोंकणी (07) गुजराती (08) डोगरी
(09) तमिल (10) तेलुगु (11) नेपाली (12) पंजाबी
(13) बांग्ला (14) बोडो (15) मणिपुरी (16) मराठी
(17) मलयालम (18) मैथिली (19) संथाली/संताली (20) संस्कृत
(21) सिंधी (22) हिन्दी।

हिन्दी भाषा की विभिन्न बोलियाँ अपने-अपने क्षेत्रों में उपभाषा के रूप में बोली जाती हैं। हिन्दी की इन बोलियों को क्षेत्र के आधार पर प्रमुख पाँच भागों में बाँटा जा सकता है।

हिन्दी के भेद व बोलियाँ –

(1) पश्चिमी हिन्दी – खड़ी बोली, ब्रजभाषा, हरियाणवी, बुन्देली और कन्नौजी।

(2) पूर्वी हिन्दी – अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी।

(3) राजस्थानी हिन्दी – मारवाड़ी, जयपुरी, मेवाती, मालवी, मेवाड़ी, बागड़ी, शेखावटी, ढँढाड़ी, हाड़ौती, अहीरवाटी और निमाड़ी।

(4) पहाड़ी हिन्दी – गढ़वाली, कुमाऊँनी और हिमाचली।

(5) बिहारी हिन्दी – मैथिली, मगही और भोजपुरी।

हिन्दी का मानक रूप – भाषा में एकरूपता, सरलता एवं अनुशासन लाने के लिए उसके मानक रूप की आवश्यकता पड़ती है। मानक भाषा को इस प्रकार परिभाषित किया जाता है कि, "सभ्य, सुसंस्कृत लोगों एवं संचार माध्यमों द्वारा अपनाई गई एकरूपता वाली भाषा मानक भाषा है, जिसका राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समान रूप में प्रयोग किया जाता है" साहित्य की रचना भी सदैव मानक भाषा में ही की जाती है।

अभ्यास

1. निम्नलिखित के आगे सही (✓) अथवा गलत (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) विचार एवं भावों को दूसरों तक भाषा के द्वारा पहुँचाते हैं। ( )

(ख) भाषा के दो रूप प्रचलित हैं। ( )

(ग) बधिर व मूक लोग लिखित व मौखिक भाषा का प्रयोग करते हैं। ( )

(घ) भारतीय संविधान में 20 भाषाओं को शामिल किया गया है। ( )

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(क) ..... और हिमाचली पहाड़ी हिन्दी की बोलियाँ हैं।

(ख) राजस्थानी हिन्दी में बोलियाँ हैं – ....., ..., ..., ... और .....।

(ग) ..... और ..... बिहारी हिन्दी की बोलियाँ हैं।

(घ) ब्रजभाषा व हरियाणवी ..... हिन्दी की बोलियाँ हैं।

(ङ) पूर्वी हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ हैं – ....., ... और .....।

3. नीचे दिए गए भाषा के रूपों में से लिखित और मौखिक रूपों को अलग-अलग कीजिए।

(क) दूरदर्शन पर गायक द्वारा गाने का कार्यक्रम। ( )

(ख) कक्षा में अध्यापक (आचार्य) द्वारा श्यामपट्ट पर लिखना। ( )

(ग) विद्यालय के सूचना पट्ट पर लिखा संदेश। ( )

(घ) प्रार्थना सभा में प्राचार्य द्वारा दिया गया संस्कारी संदेश। ( )

(ङ) विद्यार्थियों द्वारा पुस्तिका में प्रश्नों के उत्तर लिखना। ( )

4. निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) भाषा किसे कहते हैं ?

(ख) भाषा के दो रूप कौन-कौन से हैं ?

(ग) व्याकरण किसे कहते हैं ?

(घ) बोली से क्या अभिप्राय है ?

(ङ) मानक हिन्दी से आप क्या समझते हैं ?

(च) भाषा हमारे लिए क्यों आवश्यक है ?

बहुविकल्पीय प्रश्न

1 भाषा के प्रचलित कितने रूप हैं ?

(क) पाँच (ख) चार (ग) दो (घ) तीन

2) भाषा केवल बोली जाती है। यह कथन है –

(क) सत्य (ख) असत्य (ग) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

3) भारतीय संविधान की कौन सी अनुसूची में 22 भाषाओं को स्वीकृति मिली है ?

(क) छठी (ख) पहली (ग) आठवीं (घ) दूसरी

4) भाषा के दो रूप कौन से हैं ?

(क) मौखिक और सांकेतिक (ख) मौखिक और लिखित

(ग) लिखित और सांकेतिक (घ) इनमें से कोई नहीं

5) भाषा के किस रूप द्वारा हम दूसरों को लिखकर संदेश भेजते हैं।

(क) मौखिक (ख) सांकेतिक

(ग) मौखिक और सांकेतिक (घ) लिखित

6) हरियाणवी बोली किस हिन्दी के अन्तर्गत आती है?

(क) बिहारी हिन्दी (ख) पश्चिमी हिन्दी (ग) पूर्वी हिन्दी (घ) पहाड़ी हिन्दी

7) भाषा के आंचलिक रूप को क्या कहते हैं?

(क) बोली (ख) भाषा (ग) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

8) हिन्दी भाषा की लिपि कौन सी है?

(क) गुरुमुखी (ख) फारसी (ग) देवनागरी (घ) रोमन

9) कुमाऊँनी बोली किस हिन्दी की बोली है?

(क) पूर्वी हिन्दी (ख) पश्चिमी हिन्दी (ग) बिहारी हिन्दी (घ) पहाड़ी हिन्दी

बालकों के लिए करणीय

आपके आस-पास बोली जाने वाली भाषाओं/बोलियों में कौन-कौन सी भाषा के शब्द आते हैं? सूची बनाएँ।

आचार्यों के लिए करणीय

आचार्य अपनी कक्षा के बच्चों को आसपास के गाँवों में ले जाकर विभिन्न भाषाओं/बोलियों के शब्दों से परिचित करवाएँ। (ग्राम्य दर्शन)

पाठ 2

वर्ण व वर्तनी

वर्ण व्यवस्था और उच्चारण – भाषा की छोटी से छोटी ध्वनि जिसके अन्य टुकड़े न हों, उसे वर्ण कहते हैं। स्वर सहित वर्णों को अक्षर भी कहा जाता है। **वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।**

उच्चारण की दृष्टि से वर्णों के दो भेद हैं–

(1) स्वर (2) व्यञ्जन

स्वर

जिन वर्णों का उच्चारण स्वंतत्र रूप से होता है तथा जिनके उच्चारण में कोई रुकावट पैदा नहीं होती, उन्हें स्वर कहते हैं। हिन्दी वर्णमाला में ग्यारह स्वर होते है – **(अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।)**

वर्तमान समय में ऋ का प्रयोग रि के रूप में होता है। ऋ का प्रयोग केवल तत्सम (संस्कृत) शब्दों में किया जाता है। **जैसे** – ऋण, ऋषि आदि

हिन्दी भाषा की वर्णमाला में दो अयोगवाह हैं– **अं, अः**

अयोगवाह – जो न स्वर हैं, न व्यञ्जन हैं, लेकिन अपनी ध्वनि प्रवाहित करते हैं, उन्हें अयोगवाह कहते हैं। **जैसे** – अंगूर और प्रातः।

स्वरों के भेद – उच्चारण की दृष्टि से स्वरों को तीन वर्गों में बाँटा गया है। (क) ह्रस्व (ख) दीर्घ (ग) प्लुत।

(क) ह्रस्व स्वर – जिन स्वरों के बोलने में कम से कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। **जैसे** – अ, इ, उ, ऋ। इनकी संख्या चार है।

(ख) दीर्घ स्वर – जिन स्वरों के बोलने में ह्रस्व स्वर से दोगुना समय लगे, उन्हे दीर्घ स्वर कहते हैं। **जैसे** – आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ। ये संख्या में 7 हैं।

(ग) प्लुत स्वर – जिन स्वरों के बोलने में ह्रस्व स्वर से तीन गुना समय लगे, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। दोगुने समय से अधिक उच्चरित होने वाले स्वरों के आगे **३** लगा देते हैं। **जैसे** – ओ३म्, रा३म।

व्यञ्जन

जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है, उन्हें व्यञ्जन कहते हैं। ये हमेशा ही स्वरों पर निर्भर करते हैं। **जैसे** – क=क्+अ, ख=ख्+अ आदि। यहाँ 'क्' स्वर रहित व्यञ्जन है और 'अ' स्वर है।

हिन्दी के व्यञ्जन वर्ण निम्नलिखित हैं –

क्	ख्	ग्	घ्	ङ्		
च्	छ्	ज्	झ्	ञ्		
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	ड़्	ढ़्
त्	थ्	द्	ध्	न्		
प्	फ्	ब्	भ्	म्		
य्	र्	ल्	व्			
श्	ष्	स्	ह्			

आलोक – उक्त व्यञ्जन वर्णों का उच्चारण करते समय हलन्त (्) का लोप हो जाता है –

व्यञ्जनों को तीन भागों में बाँटा गया है।

(1) स्पर्श व्यञ्जन **(2) अंतस्थ व्यञ्जन** **(3) ऊष्म व्यञ्जन**

- क से म तक स्पर्श व्यञ्जन कहलाते हैं।
- य र ल व अंतस्थ व्यञ्जन कहलाते हैं।
- श ष स ह ऊष्म व्यञ्जन कहलाते हैं।

वर्णमाला के अलावा कुछ अन्य वर्ण भी हैं, जिन्हें हिन्दी वर्णमाला में स्थान मिल गया है। क्ष, त्र, ज्ञ, श्र, ज़, फ़ आदि। इन व्यञ्जनों की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं –

(1) ड़ और ढ़ हिन्दी में ड और ढ से विकसित नए व्यञ्जन हैं।

(2) ङ् और ञ व्यञ्जनों का स्वंतत्र रूप में प्रयोग नहीं होता। इनका रूप बदलकर (प्रायः अनुस्वार के रूप में) प्रयोग होता है।

(3) ज़ और फ़ आदि ध्वनियाँ विदेशी हैं। अंग्रेजी, अरबी/फारसी शब्दों के सटीक उच्चारण के लिए प्रयुक्त की जाती है।

(4) क्ष, त्र, ज्ञ, श्र आदि ध्वनियाँ संयुक्त व्यञ्जन के रूप में गिनी जाती हैं। **जैसे** –

क्ष = क् + ष् + अ **त्र = त् + र् + अ**

ज्ञ = ज् + ञ + अ **श्र = श् + र् + अ**

(5) जो व्यञ्जन स्वर रहित होते हैं, उनके नीचे हलन्त चिह्न (्) लगाया जाता है। **जैसे** – क्, म् प् आदि।

व्यञ्जनों के भेद

1. **स्पर्श व्यञ्जन** – जिन वर्णों का उच्चारण करते समय जिह्वा मुख के विभिन्न स्थानों को स्पर्श करती है, उन्हें स्पर्श व्यञ्जन कहते हैं। इन्हें निम्न वर्गों में बाँटा गया है –

वर्ग	वर्ण	उच्चारण स्थान	नाम
क वर्ग	क, ख, ग, घ, ङ	कंठ से	कण्ठ्य
च वर्ग	च, छ, ज, झ, ञ	तालू से	तालव्य
ट वर्ग	ट, ठ, ड, ढ, ण	मूर्धा से	मूर्धन्य
त वर्ग	त, थ, द, ध, न	दाँत से	दन्त्य
प वर्ग	प, फ, ब, भ, म	ओष्ठ से	ओष्ठ्य
पाँचों वर्गों के अंतिम वर्ण ङ, ञ, ण, न, म को नासिक्य व्यञ्जन भी कहते हैं।			

2. **अंतस्थ व्यञ्जन** – ये व्यञ्जन स्पर्श और ऊष्म के बीच स्थित हैं, दूसरे इनकी स्थिति स्वर और व्यञ्जन के बीच की है इसलिए ये अतंस्थ व्यञ्जन कहलाते हैं। य, र, ल, व : इनका उच्चारण क्रमशः जीभ, तालु, दाँत और होंठ से होता है। य और व को अर्ध स्वर भी कहते हैं।

3. **ऊष्म व्यञ्जन** – जिन वर्णों का उच्चारण करते समय मुख से गर्म श्वास निकलती है, उन्हें ऊष्म व्यञ्जन कहते हैं। ये संख्या में चार हैं – श, ष, स, ह।

आगत वर्ण– विदेशी भाषाओं से आए हुए व्यञ्जनों को आगत व्यञ्जन कहा जाता है। (अरबी, फारसी और अंग्रेजी) इन विदेशी ध्वनियों (व्यञ्जनों) के नीचे बिंदु लगाया जाता है। इसे नुक्ता कहा जाता है। जैसे ज़रा, ज़ोर, ज़ेबरा, फ़ौरन आदि। वर्तमान में केवल ज़ तथा फ़ ही नुक्ता वाले व्यञ्जन ऐसे हैं जो प्रचलन में हैं। क, ख, ग आदि वर्णों में अब नुक्ता नहीं लगाया जाता।

संयुक्त व्यञ्जन – जब दो व्यञ्जन आपस में मिलते हैं, तो उन्हें संयुक्त व्यञ्जन कहते हैं। **जैसे** –

क्ष = क् + ष त्र = त् + र

ज्ञ = ज् + ञ श्र = श् + र

द्वित्व व्यञ्जन – एक जैसे वर्णों के मेल को द्वित्व व्यञ्जन कहते हैं। **जैसे** –

क् + क – क्क = पक्का

च् + च – च्च = कच्चा

हिन्दी वर्ण व्यवस्था को निम्नलिखित वर्ण तालिका के द्वारा भी समझा जा सकता है।

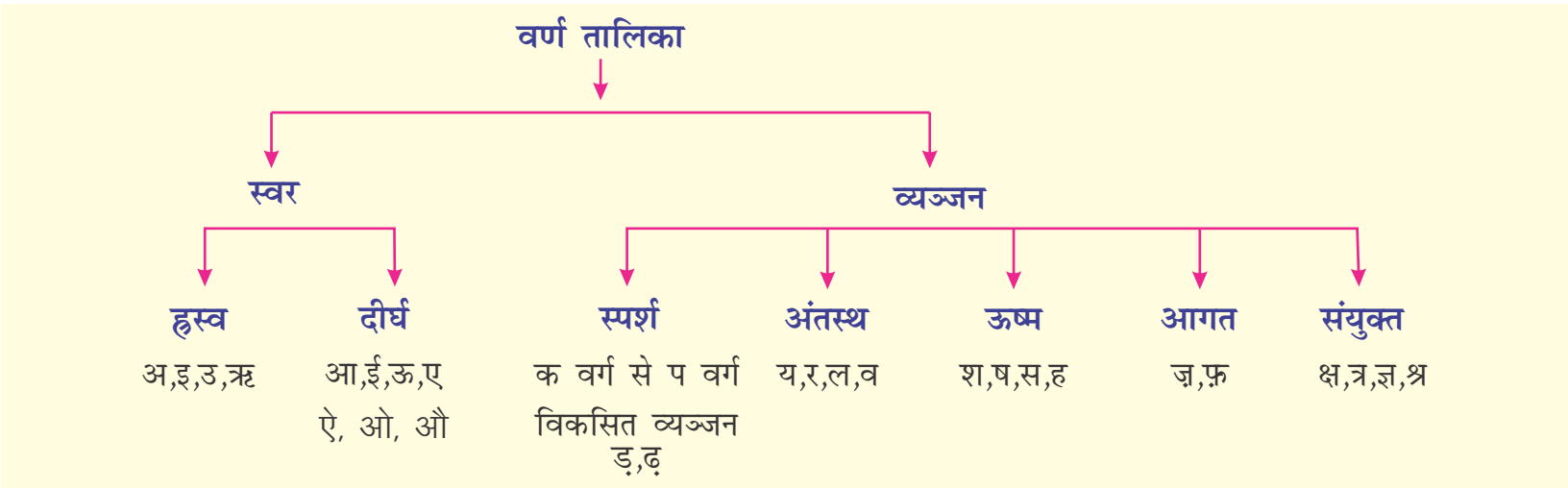

व्यञ्जनों का वर्गीकरण

1. **स्वर तंत्री के कंपन के आधार पर** – स्वर तंत्री के कंपन के आधार पर व्यञ्जन के दो भेद हैं।

   (क) अघोष– जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वर तंत्रियों में कंपन नहीं होता, उन्हें अघोष व्यञ्जन कहते हैं। **जैसे** – प्रत्येक वर्ग के प्रथम व द्वितीय वर्ण **(क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ)** तथा **श, ष, स।**

   (ख) सघोष– जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वर तंत्रियों में कंपन होता है, उन्हें सघोष व्यञ्जन कहते हैं। **जैसे** – प्रत्येक वर्ग के तृतीय, चतुर्थ और पंचम वर्ण **(ग, घ, ङ) (ज, झ, ञ) (ड, ढ, ण) (द, ध, न) (ब, भ, म)** व सभी स्वर **(अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ)** तथा **ड़, ढ़, य, र, ल, व, ह।**

2. **प्राण (श्वास) की मात्रा के आधार पर** –

   उच्चारण में लगने वाली श्वास की मात्रा के आधार पर व्यञ्जन के दो भेद हैं –

   (क) अल्पप्राण– जिन व्यञ्जनों के उच्चारण में फेफड़ों से आने वाली वायु (श्वास) की मात्रा कम लगती है,

उन्हें अल्पप्राण व्यञ्जन कहते हैं। **जैसे** – प्रत्येक वर्ग का प्रथम, तृतीय व पंचम वर्ण **(क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म)** तथा **ड़, य, र, ल, व।**

(ख) महाप्राण – जिन व्यञ्जनों के उच्चारण में फेफड़ों से निकलने वाली वायु (श्वास) की मात्रा अधिक होती है, उन्हें महाप्राण व्यञ्जन कहते हैं। **जैसे** – प्रत्येक वर्ग का द्वितीय व चतुर्थ व्यञ्जन **(ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध)** तथा **ढ़, श, ष, स, ह।**

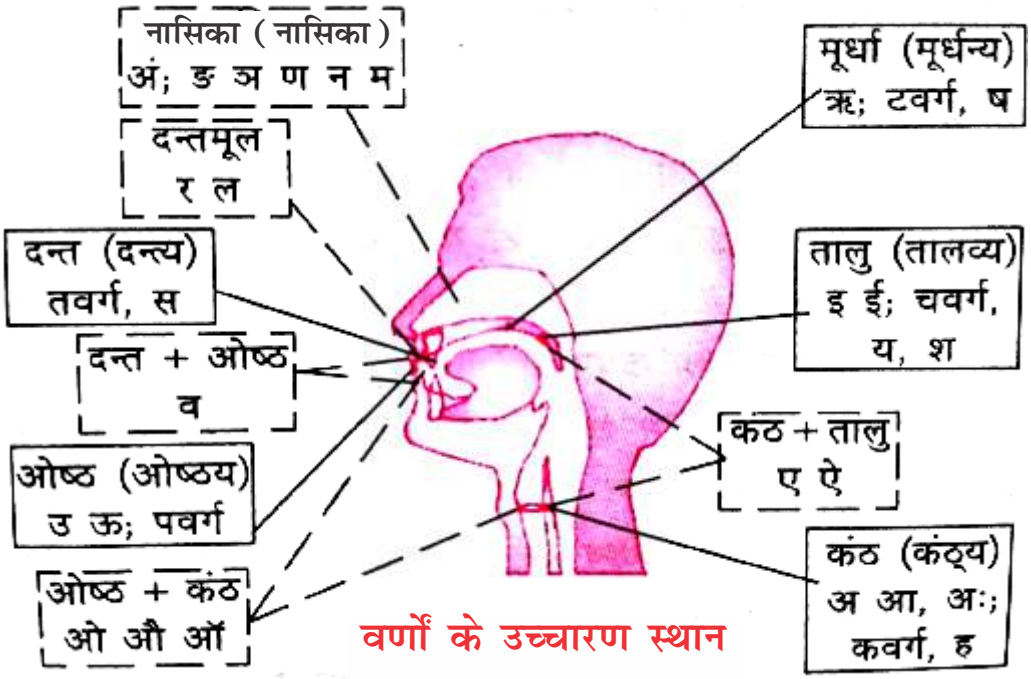

वर्णों के उच्चारण स्थान

उच्चारण स्थानों के अनुसार इनके वर्ग इस प्रकार हैं –

वर्ग	वर्ण	उच्चारण स्थान	वर्ण का नाम
क वर्ग	क्, ख्, ग्, घ्, ङ्	कंठ	कंठ्य
च वर्ग	च्, छ्, ज्, झ्, ञ्	तालू	तालव्य
ट वर्ग	ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्	मूर्धा	मूर्धन्य
त वर्ग	त्, थ्, द्, ध्, न्	दाँत	दंत्य
प वर्ग	प्, फ्, ब्, भ्, म्	ओष्ठ	ओष्ठ्य

ङ्, ञ्, ण्, न्, म् व्यञ्जन वर्णों का उच्चारण नासिका के साथ-साथ कंठ, तालू, मूर्धा, दाँत, ओष्ठ के स्पर्श से होता है। इन्हें नासिक्य व्यञ्जन भी कहते हैं।

व्यञ्जन गुच्छ

वाक्य रचना में जहाँ किसी शब्द में दो या दो से अधिक व्यञ्जन एक साथ उच्चरित किए जाएँ या लिखे जाएँ, उन्हें व्यञ्जन गुच्छ कहते हैं। **जैसे** – इक्का, दुक्का, अम्मा आदि।

(1) संयुक्त व्यञ्जन का स्वतंत्र प्रयोग –

श्रव्य, ज्ञान, त्रयोदश, श्रेष्ठ, ज्ञानी, क्षत्रिय।